चरखण्डद्वारा स्वदेशोदय का ज्ञान —

लङ्कोदया विघटिका गजभानि गोऽङ्कः —
दस्त्राग्निपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः।
हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थैः —
मेषादितो घटत उत्क्रमतस्त्विमे स्युः॥

लंका के राशि उदयमान २७८।२९९।३२३ ये पलात्मक क्रम और उत्क्रम से रखने से मेषादि ६ राशि का उदयमान होता है। इन्हीं में प्रथम (मेषादि) ३ राशि में क्रम से चरखण्ड वियोग (घटाने) और कर्कादि (बाद की ३ राशि) में उत्क्रम से योग (जोड़ने से) स्वदेशीय ६ राशि का उदयमान हो जायगा, वे ही व्युत्क्रम से तुलादि (तुला से मीन पर्यन्त ६ राशि) राशि के भी उदयमान हो जायँगे।

यथा ५७।४६।१९ —

लङ्कोदय - चरखण्ड = काशयुदय	लङ्कोदय - चरखण्ड = मिथिलोदय
मे० मी० = २७८ - ५७ = २२१	२७८ - ६० = २१८
वृ० कुं० = २९९ - ४६ = २५३	२९९ - ४८ = २५१
मि० म० = ३२३ - १९ = ३०४	३२३ - २० = ३०३
क० ध० = ३२३ + १९ + ३४२	३२३ + २० = ३४३
सिं० वृ० = २९९ + ४६ + ३४५	२९९ + ४८ = ३४७
कं० तु० = २७८ + ५७ + ३३५	२७८ + ६० = ३३८

डॉ० सुरेश कुमार
सह० प्राध्यापक (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुरवसेना,
पूर्णियाँ।

मिश्र नक्षत्र और उनके कृत्य —

विशाखाग्नेयमे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम्।
तत्राऽग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्धयति॥

विशाखा, कृत्तिका और कृत्तिकार ये मिश्र और साधारण संज्ञक हैं, इनमें अग्निकार्य, मिश्रकार्य और वृषोत्सर्गादिकार्य सिद्ध होते हैं।

लघु नक्षत्र और उनके कृत्य —

हस्ताऽश्वि-पुष्याऽभिजित: क्षिप्रं लघु मुरुस्तथा।
तस्मिन् पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्प-कलादिकम्॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् और बृहस्पतिवार ये लघु और क्षिप्र संज्ञक हैं, इनमें यात्रा, बाजार लगाना, भूषणकार्य, वस्त्र, आभूषण, रति, शिल्प (कारीगरी) कलाकार्य सिद्ध होते हैं।

मृदु नक्षत्र और उनके कृत्य —

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं मृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यं विभूषणम्॥

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु तथा मैत्र संज्ञक हैं, इनमें समस्त भूषणकार्य, गीत, नृत्य, वस्त्र-धारण, क्रीडा, मित्रकार्य शुभ हैं।

P.T.O

ज्योतिषशास्त्री

ध्रुवनक्षत्र और उनके कृत्य —

उत्तरात्रय-रोहिण्यो मास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्।
तत्र स्थिरं बीजगेहक्षान्यारामादिसिद्धये॥

तीनों-उत्तरा, रोहिणी और रविवार ये ध्रुव संज्ञक और स्थिर संज्ञक हैं। इनमें स्थायी गृहारम्भ, विवाह, उपनयन, कृषि, शान्ति और वाटिका लगाना आदि कार्य शुभ होते हैं।

चर नक्षत्र और उनके कृत्य —

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चाणि-चरं-चलम्।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम्॥

स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा सोमवार ये चर और चल संज्ञक हैं, इनमें यात्रा, क्रीया गमन, हाथी आदि सवारी पर चढ़ना, नृत्य-गीतादि थोड़े काल में सम्पन्न होने योग्य सब कार्य सिद्ध होते हैं।

उग्र नक्षत्र और उनके कृत्य —

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन् घातग्निशास्त्राणि विषशस्त्रादिसिद्धयति॥

तीनों-पूर्वा, भरणी, मघा और मङ्गलवार उग्र और क्रूर संज्ञक हैं, इनमें घात अग्नि, दाहना, विष, शस्त्र, मारण आदि क्रूरकर्म की सिद्धि होती है।

P.T.O

इस पलभा को ३ स्थान में रखकर प्रथम स्थान में १० से, द्वितीय में ८ से और तृतीय स्थान में १० से गुणाकर ३ से भाग देवें। इस प्रकार जो गुणनफल होता है, उसको चरखण्ड कहा जाता है।

यथा उदाहरण - काशी की पलभा अंगुलादि ५।४५ है, और मिथिला की पलभा-अंगुलादि ६।० है। अत: उक्तरीति से-

काशी के चरखण्ड	मिथिला के चरखण्ड
(५।४५)×१० = ५६।३० = ५६	(६।०)×१० = ६०
(५।४५)×८ = = ४६	(६।०)×८ = ४८
५।४५ ×१० / ३ = = १९	(६।०)×१० / ३ = २०

इस प्रकार काशी के ५६।४६।१९ और मिथिला के ६।४८।२० चरखण्ड हुआ।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना
पूर्णियाँ।